“काशी मरणान्मुक्ति” पुस्तक को 'दिव्य' साहित्य पुरस्कार

अखिल भारतीय अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार

साहित्य सदन, 145-ए, साँईनाथ, सी-सेक्टर, कोलार रोड,
भोपाल-462042 (म.प्र.)
मो. 09977782777, फोन : 0755-2494777

प्रशस्ति-पत्र

अखिल भारतीय अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार समिति, भोपाल (म.प्र.) श्री मनोज ठक्कर (इन्दौर) एवं सुश्री रश्मि छाजेड़ (गोंदिया) को उनकी श्रेष्ठ कृति 'काशी मरणान्मुक्ति' (उपन्यास) के लिए संयुक्त रूप से अम्बिका प्रसाद दिव्य पुरस्कार वर्ष 2012 प्रदान करते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव करती है।

पद्मश्री ओ.एन.श्रीवास्तव
पूर्व राज्यपाल, त्रिपुरा एवं नागालैण्ड
संरक्षक, दिव्य पुरस्कार समिति, भोपाल
मो. 09893061941

जगदीश किंजल्क
जगदीश किंजल्क
संयोजक, दिव्य पुरस्कार समिति,
एवं संपादक, 'दिव्यालोक'
मो.09977782777

अगस्त 01, 2013, इंदौर; भारत के प्रसिद्ध लेखक अम्बिका प्रसाद वर्मा 'दिव्य' की स्मृति में साहित्य सदन भोपाल से संचालित अखिल भारतीय अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरुस्कार समिति द्वारा 16 जुलाई को पुरुस्कारों की घोषणा की गई| इस प्रसिद्ध पुरुस्कार के लिए लेखकद्वय मनोज ठक्कर एवं रश्मि छाजेड़ (गादिया) को उनके द्वारा रचित 'काशी मरणान्मुक्ति' के लिए दिव्य पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा इस पुरस्कार समिति के संयोजक श्री जगदीश किंजल्क जी ने बताया कि अब तक संयोजित पंद्रह पुरस्कार समारोह में 42 लेखकों को दिव्य पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है एवं इस वर्ष काशी मरणान्मुक्ति को देश-विदेश से हिंदी भाषा में प्राप्त 96 पुस्तकों में से चयनित किया गया है। यह एक गर्व का विषय एवं पुस्तक की गूढता व गंभीरता का प्रमाण भी कि काशी मरणान्मुक्ति को सतत कई राजकीय एवं सामजिक प्रतिष्ठानों द्वारा सम्मानों, सराहनाओ, पुरस्कारों आदि से अलंकृत किया जा रहा है।

श्री किंजल्क ने यह सूचना साहित्य सदन में निर्णायक गण की एक बैठक में पुस्तकों को अम्बिका प्रसाद पुरस्कार के लिए चयनित करने के पश्चात् दी एवं साथ ही यह भी बताया कि इस सम्मान स्वरुप नगद राशि एवं

प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा| श्री अम्बिका प्रसाद 'दिव्य' का जन्म 16 मार्च, 1907 को अजयगढ़ जि. पन्ना (म. प्र.) में हुआ, दिव्य ने एक शिक्षक होने के साथ-साथ कई उपन्यास , काव्य, नाट्य रचना को जन्म दिया साथ ही उनके द्वारा लगभग 400 चित्र भी चित्रित किए गए|

'काशी मरणान्मुक्ति' की सराहनाओं एवं सम्मानों की सूचि में यह एक और उपलब्धि है| लेखन शैली में अद्भुत होने के साथ ही साथ इस पुस्तक की कहानी दार्शनिक एवं आध्यात्मिकता से प्रचुर है|

श्री ठक्कर जी अपने लेखन कार्य को आगे बढ़ाते हुए अपनी एक और रचना "दी म्यिस्टक फैथ" को अंतिम रूप दे रहे है जो शीघ्र ही विमोचित की जाएगी| महाकुम्भ पर्व के चित्रों पर आधारित चित्रण एवं वहाँ पर आयोजित प्रथाओं, संतो, महात्माओं, आध्यात्मिक समागमों का भावपूर्ण एवं अविस्मरणीय संग्रह है।

वह नीरव मन होता है न कि अनुशासित मन जहाँ परम स्वच्छंदता व्याप्त होती है| इसी परम स्वच्छंदता में कभी कोई ईश्वरीय कृत्य घटित होता ऐसी एक रचना को जन्म दे देता है| इसी ईशकृपा एवं गुरु शिर्डी साईं बाबा का आशीर्वाद को अपना सर्वस्व मानते लेखकद्वय मनोज जी एवं रश्मि जी ने इसकी आय से प्राप्त राशि को सामाजिक कल्याण हेतु प्रदान कर दिया है एवं आगे भी करते रहेंगे|